शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तुलसी साहित्य में आधुनिक बोध

डॉ. बृजेश धर दुबे
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
सरस्वती विज्ञान महाविद्यालय,
रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

तुलसी साहित्य समय, स्थान एवं परिस्थिति की सीमाओं से परे 'बहुजन हिताय के सूत्र वाक्य से संपृक्त प्राचीन काल से वर्तमान काल तक जन-जन के लिये जीवन मंत्र बना हुआ है। स्वान्तः सुखाय की अवधारणा को फलीभूत कर जन-जन की आत्मा में इस भाव बोध को तुलसी साहित्य ने साकार रूप प्रदान किया है। तुलसी साहित्य का लोकोपकारी रूप उसे अनन्तकाल तक जीवन्त कर दिया है। उनके साहित्य में विद्यमान युगबोध कभी पुराना नहीं होगा। अपितु उसका सम्बन्ध प्रत्येक युग के लिये उतना ही नवीन व समीचीन रहेगा जितना अपने युग के लिये जाना जाता है। अतः हम कह सकते है कि तुलसी साहित्य का आधुनिक बोध नित नूतन प्रासंगिक एवं लोकमंगलकारी है।

रामचरित मानस में आधुनिकता बोध

तुलसीदास जी हिन्दी भाषा के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय समाज एवं दर्शन के श्रेष्ठ कवि हैं। तुलसी जैसे कालजयी लोकनायक महाकवि समूचे संसार के लिए गौरव स्वरूप हैं। उनका साहित्य गीता से भी अधिक सरल, सहज एवं ग्राह्य है। जन-जन के लिए सुबोध एवं जीवन दर्शन का ज्ञान कराने वाले तुलसी की प्रासंगिकता आज पहले से भी अधिक एवं महत्वपूर्ण है, साथ ही भविष्य में भी कभी अप्रासंगिक नहीं होगा। समय की गति के साथ जिस प्रकार तुलसी साहित्य जन जीवन से संपृक्त हुआ वैसा चमत्कार अन्यत्र कहीं नहीं दिखता। तुलसी साहित्य का क्षेत्र समय के साथ और अधिक व्यापक हुआ है। कहना न होगा कि इसको क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय सीमाओं के पार वैश्विक आकर्षण, अनुसंधान एवं जीवन मूल्यों का पर्याय बनते देखा जा सकता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने साहित्य विशेषकर श्रीरामचरित मानस में जीवन के सभी पक्षों का समग्रता एवं सूक्ष्मता के साथ इतना सुन्दर चित्रण किया है कि वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वानुभूति का विषय दिखाई देता है।

आज के आपा-धापी भरे समय में व्यक्ति तमाम परेशानियों से जूझ रहा है। संवेदनाहीन हो रहा है, मानवता मर रही है, सम्बन्धों का विलोप हो रहा है, तब ऐसे समय में तुलसी दास जी के विचार विशेषतः मानस के प्रसंग मानव मन के और अधिक निकट दिखाई दे रहे हैं। आधुनिक युग में जन-मन के छटपटाहट की सटीक व्याख्या के साथ ही यह जन मन के ताप को दूर करने के लिए बरगद की छाँव के सदृश है। बाबा तुलसी ने जिस प्रकार मानस सृजन के आरम्भ में 'स्वान्तः सुखाय' को अभिमंत्रित किया वास्तव में आज केवल मानस के अनुशीलन मात्रा से इस सुख की अनुभूति होती है। राज और समाज से लेकर घर

परिवार के अन्तर्सम्बन्ध एवं उनके कर्तव्यों की गहन विवेचना ने मानस के कालजयी स्वरूप एवं आधुनिक बोध को और मजबूत किया है। आज की विद्रूपताओं में भी सम्बन्धों की मर्यादा मानस के आधारभूमि पर उतनी ही सहज, सरल व स्वीकार्य हो सकती है, जितनी कल्पना कभी गोस्वामी जी ने मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम व उनके सम्बन्धों के रूप में की थी। राजा और प्रजा के सम्बन्ध में जिन मूल्यों की स्थापना गोस्वामी जी द्वारा जन-जन तक पहुँची, उसी का प्रभाव यह है कि हम सदा रामराज्य की कल्पना करते हैं। राजा के सभी उचित कर्तव्यों को चिन्हित कर गोस्वामी जी ने शासन व्यवस्था के मानदण्ड निर्धारित करते हुए कहा है -

"सोचिय नृपति जो नीति न जाना।
जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना।।"**1**

गोस्वामी जी ने कहा है राजा वही अच्छा है जो अपनी प्रजा को प्राणों के समान प्रिय मानता है -

"अनुचित उचित विचारू तजि, जे पालहिं पितु वैन।
ते भाजन सुख सुजस के, बसहि अमर पुर ऐन।।"2

भ्रातृ प्रेम की अनूठी मिसाल को युग्युगान्तर के मार्गदर्शन एवं उदाहरण के लिये राम-भरत, राम-लक्ष्मण के रूप में बाबा तुलसी ने अपने साहित्य में अमर कर दिया। गोस्वामी जी ने इन सम्बन्धों को उजागर करते हुए कहा है, यदि पृथ्वी पर भरत का जन्म न होता तो पृथ्वी पर धर्म की धुरी को कौन धारण करता ? हे राम! तुम्हारे बिना भरत जी के गुणों की कथा को भला कौन जान सकता है- यथा -

"जौं न होत जग जनम भरत को। एकल धरम धुर धरनि धरत को। कवि कुल अगम भरत गुनगाथा। को जानइ तुम्ह बिन रघुनाथा।"**3**

समाज एवं परिवार में पिता का दायित्व एवं पुत्र का कर्तव्य बहुत ही महत्वपूर्ण हैं इसकी व्याख्या एवं स्थापना का कार्य प्राचीन काल से विविध रूपों में चलता आ रहा है, किन्तु विषय को जितना सुन्दर गोस्वामी जी ने प्रतिष्ठित किया है, उससे यह विषय सनातन हो गया है। पिता का अधिकार एवं दायित्व तथा पुत्र के कर्तव्य को राजा दशरथ के द्वारा कैकेई से कहे गये इस कथन के रूप में देखा जा सकता है।

"लोभ न रामहिं राजकर, बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट विचारि जिय, करत रहेहुँ नृपनीति।"**4**

दशरथ के मृत्यु उपरान्त राम के कुलगुरू वशिष्ठ जी भरत जी को राज्य करने की बात कहते हुए व्यवस्था बताते हैं -

"वेद विहित संमत सबही का, जेहिं पितु देइ सो पावइ टीका।"**5**

लोकमत एवं वेदमत का सहारा भी गोस्वामी जी ने इस आशय को स्पष्ट करने हेतु लिखा है -

"लोक वेद संमत सब कहई, जेहिं पितु देइ राजु सो लहई।।"**6**

नारी के मान-सम्मान की प्रतिष्ठा गोस्वामी जी ने मानस के कई प्रसंगों में की है। यह विषय आज के युग में जितना महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है, इससे बाबा तुलसी की आधुनिक दृष्टि का अन्दाजा लगाया जा सकता है। चित्रकूट सभा में सीता के त्याग एवं समर्पण को देखकर राजा जनक जी उनकी प्रशंसा में कह उठते हैं -

"पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ। सुजस धवल जग कह सबकोऊ।"**7**

राम का आदर्श चरित्र पुत्र रूप में प्रतिष्ठित कर गोस्वामी जी ने कालांतर के समस्त संस्कृतियों को पुत्र कर्तव्य का बोध कराया है। पिता की

आज्ञा से राम राज्य को त्यागकर वनगमन हेतु प्रस्तुत होते हुए माता कैकेई से कहते हैं

"सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मातु वचन अनुरागी।।
तनय मातु पितु तोष निहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा।।"**8**

बाबा तुलसी के साहित्य में पारिवारिक सम्बन्धों के आदर्श एवं मर्यादा के साथ सामाजिक सम्बन्धों के आदर्श एवं मर्यादा को प्रस्तुत किया गया है। गुरू-शिष्य परम्परा की मर्यादा हो या मित्र की, प्रजा की मर्यादा हो या राजा की, संत हो या साधु, राज व्यवस्था, वर्णव्यवस्था आदि सभी विषयों पर सम्यक विवेचन प्रस्तुत किया है। राम और सुग्रीव की मित्रता आज के युग के लिये ऐसा उदाहरण है, जिससे लोग मित्रता की मर्यादा का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। सुग्रीव की विपत्ति कथा जानकर राम कह उठते हैं।

"जे न मित्र दुःख होहिं दुखारी। तिन्हहि विलोकत पातक भारी।।
निज दुःख गिरि सम बजकरि जाना। मित्र के दुःख रज मेरू समाना।।
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा। गुन प्रगटै अवगुनहिं दुरावा।"**9**

संत और असंत के लक्षण निरूपित करते हुए वे सामाजिक आदर्श एवं सामाजिक जीवन मूल्यों को व्यक्त करते हैं। संत असंत के भेद बताते हुए गोस्वामी जी कहते हैं -

"संत असंतन्ह कै असि करनी। जिमि कुठार चंदन आचरनी।।
काटइ परसु मलय सुनु भाई। निज गुन देइ सुगंध बसाई।।"**10**

तुलसी काव्य का मूल उद्देश्य लोकमंगल का विधान है। लोकमंगल का विधान तभी हो सकता है, जब समाज व परिवार में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो तथा उदात्त्त जीवन मूल्यों पर सबका ध्यान केन्द्रित हो। गोस्वामी जी की दृष्टि रामकथा के माध्यम से आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना करने की ओर केन्द्रित रही है। इसी कारण से तुलसी साहित्य में जीवन के विविध प्रसंगों का उल्लेख मिलता है, तथा जीवन के किसी भी पक्ष की उपेक्षा नहीं हो सकी है।

आधुनिक युग के संतप्त जीवन के लिये बाबा तुलसी का साहित्य कुँए के जल के सदृश शीतलता प्रदान करने वाला है। दैहिक, दैविक, भौतिक ताप के निवारणार्थ तुलसी साहित्य, संजीवनी सदृश है। राम-राज्य की व्यवस्था में इसका उल्लेख करते हुए गोस्वामी जी ने कहा है-

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज काहुहिं नहिं व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म सुरति श्रुति नीती।।"**11**

मानस का लोकव्यापी स्वरूप भारत के अपढ़ वर्ग में भी लोकप्रिय है जो इसकी चैपाइयों को सुनकर आनन्द व जीवन मूल्य ग्रहण करते हैं तथा साथ ही विद्वत समाज में भी इसकी लोकप्रियता अक्षुण्य है। तुलसी के व्यक्तित्व में कवि और भक्त प्रतिस्पर्धा के रूप में न आकर पूरक रूप में आए हैं, इसी के फलस्वरूप मानस में आदर्श की उच्चता और अभिव्यंजना की उत्कृष्टता दोनों पर समान रूप से आग्रह दिखाया गया है। इस तरह से तुलसी साहित्य के लोक मंगलकारी स्वरूप का उद्देश्य सफल हो जाता है, जिसके विषय में बाबा तुलसी ने मानस में कहा भी है-

"कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कर हित होई।।"**12**

गोस्वामी जी एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे जो समाज व परिवार में नैतिक मूल्यों की पक्षधर हो। उन्होंने परिवार एवं समाज के

आदर्श रूप की स्थापना की है। श्रीरामचरित मानस के उत्तरकाण्ड में 'रामराज्य' की परिकल्पना परिवार व समाज के इसी आदर्श की स्थापना के लिये की है। गोस्वामी जी की काव्य दृष्टि इतनी प्रखर थी कि उन्होंने उत्तरकाण्ड में कलियुग की विडंबना का इतना सटीक वर्णन किया है कि उसमें युगबोध की समस्त वृत्तियाँ प्रतिबिम्बित हो उठी। वर्णव्यवस्था किसानों की दशा, व्यापारियों की स्थिति, राजा-प्रजा की स्थिति, संत-असंत की परिभाषा, सभ्यता, संस्कृति आदि तथ्यों के वर्णन में आधुनिक युगबोध की सटीक झलक दिखती है।

निष्कर्ष

गोस्वामी तुलसीदास एक महान भक्त प्रबुद्ध कवि, लोकनायक, समाज सुधारक, उपदेशक एवं तत्व द्रष्टा दार्शनिक थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तुलसी के महत्व का प्रतिपादन करते हुए कहा है, "तुलसीदास का महत्व बताने के लिये विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनात्मक उक्तियों का सहारा लिया है। नाभादास ने इन्हें कलिकाल का वाल्मीकि कहा था। स्मिथ ने उन्हें मुगलकाल का सबसे बड़ा व्यक्ति माना था, ग्रियर्सन ने इन्हें बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा था, और यह तो बहुत लोगों ने बहुत बार कहा है कि उनकी रामचरितमानस भारत की बाइबिल है। इन सारी उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि लोकनायक और महात्मा थे। इस प्रकार तुलसी ने अपने साहित्य को लोकमंगल से जोड़कर उसे अनन्तकाल के लिए लोकोपकारी रूप दे दिया और स्वयं अनन्तकाल तक के लिए अमर हो गये। तत्कालीन समय में ही उनकी इतनी लोकसिद्धि फैल चुकी थी कि रहीम ने उनके विषय में कहा था -

'गोद लिये हुलसी फिरै तुलसी सो सुत होय।

अतः समग्र रूप में देखा जा सकता है कि गोस्वामी जी के साहित्य में आधुनिक बोध युगानुरूप जीवन्त रहेगा। उनके साहित्य की प्रासंगिकता व चमक कभी फीकी नहीं होगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या251, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

2 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या252, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

3 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या280, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

4 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या194, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

5 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या264, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

6 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या 266, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

7 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या274, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

8 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ संख्या279, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

9 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस किष्किन्धाकाण्ड, पृष्ठ संख्या354, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

10 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस उत्तरकाण्ड, पृष्ठ संख्या492, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

शब्द–ब्रह्म

E ISSN 2320 – 0871

भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

17 अगस्त 2020

पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

11 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस उत्तरकाण्ड, पृष्ठ संख्या485, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84 वाँ संस्करण।

12 गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड, पृष्ठ संख्या26, प्रकाशन-गीता प्रेस गोरखपुर 84वाँ संस्करण।